Vol. 14, Issue 07, July: 2026
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ती प्रवृत्ति: भारतीय समाज की बदलती सामाजिक संरचना का अध्ययन

DOI: https://doi.org/10.63345/ijrhs.net.v14.i7.2

डॉ. सीमा रानी

सह-प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग

राजकीय डिग्री कॉलेज, जहाँगीराबाद

जनपद बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश— भारतीय समाज में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ती प्रवृत्ति पिछले कुछ दशकों में तीव्र सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों का परिणाम है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का विस्तार, महिलाओं की बढ़ती आर्थिक भागीदारी, रोजगार-आधारित प्रवास तथा वैश्वीकरण ने पारिवारिक संरचना और पारस्परिक संबंधों को नए स्वरूप प्रदान किए हैं। पूर्ववर्ती अध्ययनों में मुख्यतः संयुक्त एवं एकल परिवारों की संरचनात्मक विशेषताओं, जनसांख्यिकीय परिवर्तनों अथवा आर्थिक प्रभावों का पृथक-पृथक विश्लेषण किया गया है। अधिकांश शोध परिवार के आकार या निवास व्यवस्था तक सीमित रहे हैं, जबकि बदलते सामाजिक मूल्यों, पीढ़ीगत संबंधों, भावनात्मक समर्थन, वृद्धजनों की देखभाल, महिलाओं की निर्णयात्मक भूमिका, डिजिटल संचार तथा भौगोलिक दूरी के बावजूद बने रहने वाले पारिवारिक संबंधों का समग्र अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित है। इसी प्रकार ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच इस परिवर्तन की तुलनात्मक सामाजिक व्याख्या तथा पारंपरिक संयुक्त परिवार के आधुनिक रूपांतरण पर भी पर्याप्त शोध उपलब्ध नहीं है। उपस्थित अध्ययन इन शोध-अंतरालों को ध्यान में रखते हुए भारतीय समाज में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ती प्रवृत्ति का बहुआयामी सामाजिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन परिवार को केवल सह-निवास की इकाई के रूप में न देखकर सामाजिक सहयोग, आर्थिक परस्पर निर्भरता, भावनात्मक संबंध, सांस्कृतिक निरंतरता तथा डिजिटल माध्यमों से संचालित विस्तारित पारिवारिक नेटवर्क के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। साथ ही, यह शोध महिलाओं की बदलती भूमिका, युवाओं की जीवनशैली, वृद्धजनों की सामाजिक सुरक्षा, बच्चों के समाजीकरण तथा पारिवारिक मूल्यों में हो रहे परिवर्तन के मध्य अंतर्संबंधों का समेकित विश्लेषण करता है। अध्ययन का एक अन्य नवीन पक्ष यह है कि इसमें पारंपरिक संयुक्त परिवार और आधुनिक एकल परिवार को परस्पर विरोधी अवधारणाओं के रूप में नहीं, बल्कि बदलती सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप विकसित हो रहे एक सतत पारिवारिक संक्रमण के रूप में देखा गया है। यह शोध भारतीय सामाजिक संरचना में परिवार संस्था के वर्तमान स्वरूप, उसकी चुनौतियों एवं संभावनाओं को समझने के साथ-साथ भविष्य की सामाजिक नीतियों, पारिवारिक कल्याण कार्यक्रमों, वृद्धजन देखभाल, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक विकास से संबंधित नीति-निर्माण के लिए उपयोगी आधार प्रदान करने का प्रयास करता है। इस प्रकार अध्ययन भारतीय परिवार व्यवस्था के परिवर्तन को समग्र सामाजिक दृष्टिकोण से समझने की दिशा में एक मौलिक एवं समसामयिक योगदान प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द— संयुक्त परिवार, एकल परिवार, सामाजिक संरचना, भारतीय समाज, पारिवारिक परिवर्तन, नगरीकरण, आधुनिकीकरण, महिला सशक्तिकरण, वृद्धजन, सामाजिक परिवर्तन.

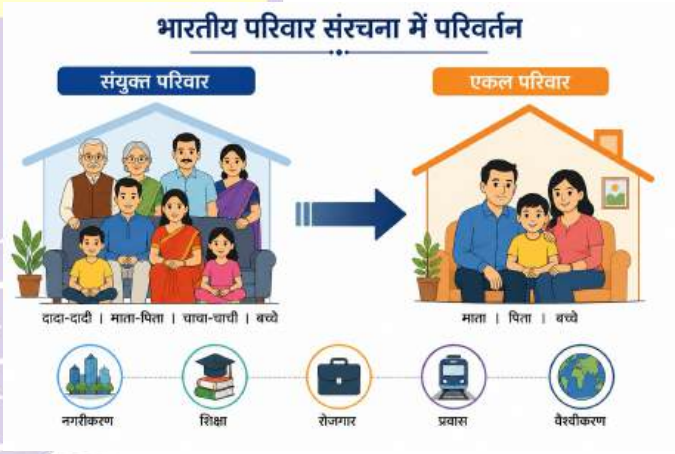

चित्र 1: भारतीय परिवार संरचना का परिवर्तन

परिचय

परिवार मानव समाज की सबसे प्राचीन, स्थायी एवं आधारभूत सामाजिक संस्था है। व्यक्ति का जन्म, समाजीकरण, मूल्यबोध, सांस्कृतिक परंपराओं का हस्तांतरण तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों का विकास मुख्यतः परिवार के माध्यम से ही होता है। भारतीय समाज में परिवार केवल रक्त-संबंधों का समूह नहीं, बल्कि सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक सहयोग, भावनात्मक समर्थन तथा सांस्कृतिक निरंतरता का प्रमुख आधार रहा है। विशेष रूप से संयुक्त परिवार प्रणाली ने सदियों तक भारतीय सामाजिक जीवन को

© 2026. This article is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

Vol. 14, Issue 07, July: 2026
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

स्थिरता प्रदान की, जहाँ एक ही छत के नीचे अनेक पीढ़ियाँ परस्पर सहयोग, संसाधनों के साझा उपयोग तथा सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना के साथ जीवन व्यतीत करती थीं। इस व्यवस्था ने वृद्धजनों की देखभाल, बच्चों के पालन-पोषण, पारिवारिक परंपराओं के संरक्षण तथा सामाजिक एकजुटता को सुदृढ़ बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इक्कीसवीं शताब्दी में भारतीय समाज तीव्र सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, वैश्वीकरण, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का विस्तार, उच्च शिक्षा का प्रसार, महिलाओं की बढ़ती शैक्षिक एवं आर्थिक भागीदारी तथा रोजगार के लिए निरंतर बढ़ते आंतरिक एवं अंतर्राज्यीय प्रवास ने पारिवारिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप पारंपरिक संयुक्त परिवारों की संख्या में अपेक्षाकृत कमी तथा एकल परिवारों की संख्या में वृद्धि देखी जा रही है। आधुनिक जीवनशैली, सीमित आवासीय सुविधाएँ, कार्यस्थल की गतिशीलता, आर्थिक स्वायत्तता तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती आकांक्षा ने भी छोटे परिवारों को अधिक व्यवहारिक एवं सुविधाजनक विकल्प के रूप में स्थापित किया है।

हालाँकि संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ती प्रवृत्ति को केवल पारिवारिक विघटन के रूप में देखना उचित नहीं होगा। वस्तुतः यह भारतीय समाज की बदलती सामाजिक संरचना, आर्थिक आवश्यकताओं और सांस्कृतिक अनुकूलन की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण है। आज अनेक परिवार भौगोलिक रूप से अलग-अलग स्थानों पर निवास करने के बावजूद आर्थिक सहयोग, भावनात्मक जुड़ाव, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा पारिवारिक निर्णयों के माध्यम से एक-दूसरे से निरंतर जुड़े रहते हैं। डिजिटल संचार माध्यमों, ऑनलाइन वित्तीय लेन-देन तथा तीव्र परिवहन सुविधाओं ने पारिवारिक संबंधों के स्वरूप को परिवर्तित किया है, जिसके कारण संयुक्तता की अवधारणा केवल सह-निवास तक सीमित नहीं रह गई है। इस प्रकार आधुनिक भारतीय परिवार पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के समन्वय का नया स्वरूप प्रस्तुत कर रहा है।

इस परिवर्तन ने समाज के विभिन्न वर्गों पर भिन्न-भिन्न प्रभाव डाले हैं। एक ओर एकल परिवारों ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता, त्वरित निर्णय-निर्माण, दंपति की स्वायत्तता, महिलाओं की कार्यभागीदारी तथा बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर अधिक ध्यान देने के अवसर प्रदान किए हैं; वहीं दूसरी ओर वृद्धजनों की देखभाल, बच्चों के समाजीकरण, भावनात्मक सहयोग की उपलब्धता तथा पारिवारिक सुरक्षा जैसी चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आई हैं। बढ़ती आयु-जनसंख्या, कार्यरत दंपतियों की संख्या में वृद्धि तथा प्रवास की प्रवृत्ति ने पारंपरिक देखभाल व्यवस्था को प्रभावित किया है। परिणामस्वरूप परिवार की सामाजिक भूमिका, उत्तरदायित्वों के वितरण तथा पारस्परिक संबंधों के स्वरूप में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देता है।

उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट होता है कि अधिकांश अध्ययन संयुक्त एवं एकल परिवारों की संरचना, जनसांख्यिकीय परिवर्तनों अथवा आर्थिक पहलुओं पर केंद्रित रहे हैं। अपेक्षाकृत कम शोध ऐसे हैं जो सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन, पीढ़ियों के मध्य संबंध, महिलाओं की बदलती भूमिका, डिजिटल माध्यमों से संचालित विस्तारित पारिवारिक नेटवर्क, वृद्धजनों की सामाजिक सुरक्षा तथा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के तुलनात्मक अनुभवों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करते हों। इसी प्रकार अनेक अध्ययनों में परिवार को केवल सह-निवास की इकाई मानकर विश्लेषित किया गया है, जबकि वर्तमान समय में परिवार की कार्यप्रणाली भौगोलिक निकटता से कहीं अधिक सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक संबंधों पर आधारित होती जा रही है। यह शोध इन्हीं शोध-अंतरालों को संबोधित करते हुए भारतीय समाज में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ती प्रवृत्ति का बहुआयामी अध्ययन प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारतीय समाज में पारिवारिक संरचना के इस परिवर्तन के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक आयामों का समग्र विश्लेषण करना है। अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि आधुनिक परिस्थितियों में संयुक्त परिवार किस प्रकार रूपांतरित हो रहे हैं, एकल परिवारों के विस्तार के पीछे कौन-कौन से प्रमुख कारक कार्यरत हैं, तथा इन परिवर्तनों का महिलाओं, युवाओं, बच्चों और वृद्धजनों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही यह शोध यह भी स्पष्ट करने का प्रयास करेगा कि भारतीय समाज में परिवार संस्था समाप्त नहीं हो रही है, बल्कि बदलती परिस्थितियों के अनुरूप अपने स्वरूप, कार्यों और संबंधों का पुनर्गठन कर रही है। इस दृष्टि से यह अध्ययन बदलती सामाजिक संरचना को समझने, सामाजिक नीति निर्माण, परिवार कल्याण कार्यक्रमों तथा सतत सामाजिक विकास के लिए उपयोगी आधार प्रदान करेगा।

साहित्य समीक्षा

भारतीय समाज में परिवार केवल जैविक संबंधों पर आधारित इकाई नहीं, बल्कि आर्थिक सहयोग, सामाजिक सुरक्षा, सांस्कृतिक हस्तांतरण और सामूहिक पहचान की आधारभूत संस्था रहा है। परंपरागत संयुक्त परिवार में अनेक पीढ़ियाँ सामान्यतः साझा आवास, संसाधनों, उत्तरदायित्वों और पारिवारिक निर्णय-व्यवस्था से जुड़ी रहती थीं। इसके विपरीत, एकल अथवा नाभिकीय परिवार मुख्यतः पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चों तक सीमित होता है। समकालीन भारत में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर परिवर्तन को प्रायः परिवार के विघटन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, परंतु उपलब्ध जनसांख्यिकीय साहित्य बताता है कि यह प्रक्रिया पूर्ण विघटन के बजाय पारिवारिक संरचना, निवास और कार्यों के पुनर्गठन का संकेत देती है [1]।

चक्रवर्ती, गोली और जेम्स के परिवार-जनसांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार, भारत में नाभिकीय परिवारों की संख्या बढ़ी है, फिर भी संयुक्तता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। अनेक व्यक्ति पृथक आवासों में रहते हुए भी आर्थिक सहायता, वृद्ध देखभाल, विवाह-संबंधी निर्णयों, संपत्ति और अनुष्ठानों के माध्यम से विस्तारित परिवार से जुड़े रहते हैं [1]। अतः "संयुक्त" और "एकल" परिवारों को परस्पर विरोधी तथा स्थिर श्रेणियों के रूप में देखने के बजाय एक जीवन-चक्र आधारित निरंतरता के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है। विवाह के बाद दंपति संयुक्त परिवार में रह सकते हैं, रोजगार अथवा स्थानांतरण के कारण पृथक हो सकते हैं और वृद्धावस्था या आर्थिक आवश्यकता के समय पुनः बहु-पीढ़ीय व्यवस्था अपना सकते हैं।

© 2026. This article is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

Vol. 14, Issue 07, July: 2026
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

इस परिवर्तन के प्रमुख संरचनात्मक कारकों में औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का विस्तार और रोजगार-आधारित प्रवास सम्मिलित हैं। बाग के ओडिशा-केंद्रित मानवशास्त्रीय अध्ययन में पाया गया कि कृषि और सामुदायिक अर्थव्यवस्था से मजदूरी एवं औद्योगिक रोजगार की ओर संक्रमण ने पारंपरिक पारिवारिक भूमिकाओं, आजीविका, रिश्तेदारी और वृद्धों की स्थिति को प्रभावित किया [2]। शहरी क्षेत्रों में सीमित आवास, उच्च जीवन-यापन लागत, नौकरी की गतिशीलता और कार्यस्थल के निकट रहने की आवश्यकता छोटे परिवारों को अधिक व्यावहारिक बनाती है। इससे उत्पादन की सामूहिक इकाई के रूप में परिवार की भूमिका कमजोर हुई है और व्यक्तिगत आय तथा दांपत्य इकाई का महत्त्व बढ़ा है।

आर्थिक आधुनिकीकरण के बावजूद संयुक्त परिवारों में संसाधन और सत्ता समान रूप से वितरित नहीं होते। सिंह और भंडारी ने उत्तर भारत के शहरी परिवारों में पाया कि संयुक्त परिवारों में धन का प्रवाह दंपति तक सीमित न होकर माता-पिता, वयस्क बच्चों और भाई-बहनों के बीच चलता है; फिर भी वित्तीय नियंत्रण प्रायः पुरुषों के पास केंद्रित रहता है [3]। इसके विपरीत, शिक्षित एवं आर्थिक रूप से स्वतंत्र दंपतियों में स्वतंत्र या संयुक्त दांपत्य निर्णयों की प्रवृत्ति बढ़ती है। इस प्रकार एकल परिवार का विकास केवल भौतिक पृथक्करण नहीं, बल्कि अधिकार, निजता, उपभोग और निर्णय-स्वायत्तता की बदलती अवधारणाओं से भी संबंधित है।

महिलाओं की शिक्षा और रोजगार ने पारिवारिक परिवर्तन को विशेष रूप से प्रभावित किया है। ऑलेंडॉर्फ के राष्ट्रीय स्तर के अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि नाभिकीय परिवार में रहना अपने-आप महिलाओं के बेहतर स्वास्थ्य की गारंटी नहीं देता; परिवार का प्रभाव पारिवारिक संबंधों की गुणवत्ता, घरेलू श्रम-वितरण और निर्णय लेने की शक्ति पर निर्भर करता है [4]। उनके एक अन्य अध्ययन में अच्छे वैवाहिक और पारिवारिक संबंधों को मातृ स्वास्थ्य सेवाओं के बेहतर उपयोग से जोड़ा गया [5]। इससे संकेत मिलता है कि परिवार का आकार स्वयं निर्णायक कारक नहीं है। सहयोगपूर्ण संयुक्त परिवार महिलाओं को बच्चों की देखभाल और घरेलू कार्यों में सहायता दे सकता है, जबकि नियंत्रणकारी पारिवारिक व्यवस्था उनकी स्वायत्तता सीमित कर सकती है। इसी प्रकार एकल परिवार स्वतंत्रता प्रदान कर सकता है, लेकिन नौकरीपेशा दंपतियों पर देखभाल और घरेलू दायित्वों का अतिरिक्त दबाव भी डाल सकता है।

परिवर्तन का सबसे संवेदनशील प्रभाव वृद्धजनों की जीवन-व्यवस्था पर दिखाई देता है। ढिल्लों, लाडूसिंह और अग्रवाल ने वृद्ध व्यक्तियों की पारिवारिक संरचना में परिवर्तन का विश्लेषण करते हुए अकेले या केवल जीवनसाथी के साथ रहने की बढ़ती संभावना को रेखांकित किया [6]। डोम्माराजू ने दिखाया कि भारत में एक-व्यक्ति परिवार अभी भी अनेक पश्चिमी देशों की तुलना में कम हैं, किंतु इनके भीतर वृद्ध महिलाओं की उपस्थिति विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है [7]। नवीन प्रक्षेपण बताते हैं कि नगरीकरण, प्रजनन दर में गिरावट और जनसंख्या वृद्धावस्था के कारण एक-व्यक्ति तथा केवल दंपति वाले परिवारों की हिस्सेदारी आगे बढ़ सकती है [8]। इससे वृद्ध देखभाल, सामाजिक पेंशन, स्वास्थ्य सेवाओं और समुदाय-आधारित सहायता की आवश्यकता बढ़ेगी।

चित्र 2: परिवर्तन के प्रमुख कारण

मनोसामाजिक दृष्टि से संयुक्त परिवार भावनात्मक सहारा, संकट प्रबंधन, बाल-समाजीकरण और वृद्ध देखभाल का महत्त्वपूर्ण स्रोत हो सकता है। चड्ढा और देब के अनुसार भारतीय परिवार की सामूहिकतावादी संरचना बीमारी, बेरोजगारी और मानसिक तनाव के समय सुरक्षा प्रदान करती है, किंतु अत्यधिक पारिवारिक हस्तक्षेप, पदानुक्रम और व्यक्ति की सीमित स्वायत्तता तनाव का कारण भी बन सकते हैं [9]। इसलिए संयुक्त परिवार को आदर्श और एकल परिवार को अनिवार्यतः समस्याग्रस्त मानना अनुभवजन्य साहित्य के अनुरूप नहीं है।

उपलब्ध अध्ययनों की प्रमुख सीमा यह है कि अधिकांश शोध परिवार को केवल सह-निवास के आधार पर वर्गीकृत करते हैं तथा डिजिटल संचार, अंतर-नगर आर्थिक सहायता, दूरस्थ वृद्ध देखभाल और "संशोधित विस्तारित परिवार" जैसे उभरते रूपों को पर्याप्त रूप से नहीं मापते। भविष्य के शोध में ग्रामीण–शहरी, जातीय, वर्गीय और क्षेत्रीय विविधताओं के साथ महिलाओं, बच्चों तथा वृद्धों पर दीर्घकालिक प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। समग्रतः भारतीय परिवार गायब नहीं हो रहा, बल्कि सामूहिक निर्भरता, दांपत्य स्वायत्तता और बाजार-आधारित सेवाओं के बीच एक मिश्रित एवं लचीली संस्था के रूप में पुनर्गठित हो रहा है।

अनुसंधान पद्धति

अनुसंधान की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन भारतीय समाज में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ती प्रवृत्ति तथा उसके परिणामस्वरूप सामाजिक संरचना में हो रहे परिवर्तनों का विश्लेषण करने हेतु **वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक** अनुसंधान दृष्टिकोण पर आधारित है। अध्ययन का उद्देश्य

© 2026. This article is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

Vol. 14, Issue 07, July: 2026
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

केवल पारिवारिक संरचना में आए परिवर्तन का वर्णन करना नहीं है, बल्कि उन सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं जनसांख्यिकीय कारकों की पहचान करना भी है जो इस परिवर्तन को प्रभावित कर रहे हैं। इस शोध में द्वितीयक आँकड़ों एवं प्रकाशित अकादमिक साहित्य के आधार पर भारतीय परिवार व्यवस्था के परिवर्तन का समग्र विश्लेषण किया गया है।

अनुसंधान अभिकल्प

यह अध्ययन **गुणात्मक एवं द्वितीयक स्रोत-आधारित** अनुसंधान अभिकल्प को अपनाता है। अध्ययन में परिवार संस्था से संबंधित विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध-पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, जनगणना आँकड़ों, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण, तथा प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा प्रकाशित सामाजिक एवं जनसांख्यिकीय अध्ययनों का व्यवस्थित विश्लेषण किया गया है। उपलब्ध साहित्य का तुलनात्मक एवं विषयगत विश्लेषण कर प्रमुख प्रवृत्तियों, समानताओं, अंतरों तथा शोध-अंतरालों की पहचान की गई।

अध्ययन के स्रोत

अध्ययन में केवल विश्वसनीय एवं प्रामाणिक स्रोतों से प्राप्त सामग्री का उपयोग किया गया है। इनमें निम्नलिखित प्रमुख स्रोत सम्मिलित हैं—

- सहकर्मी-समीक्षित शोध-पत्र
- Springer, Elsevier, Wiley, SAGE तथा Taylor & Francis जैसे प्रतिष्ठित प्रकाशकों के प्रकाशन
- भारत की जनगणना
- National Family Health Survey
- National Sample Survey
- International Institute for Population Sciences
- भारत सरकार के सामाजिक एवं जनसांख्यिकीय प्रतिवेदन
- विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान संस्थानों के प्रकाशित शोध

अध्ययन में केवल सत्यापित एवं उद्धृत किए जा सकने वाले अकादमिक स्रोतों को सम्मिलित किया गया है।

डेटा संकलन की विधि

इस अध्ययन में **द्वितीयक डेटा संकलन विधि** का उपयोग किया गया है। संबंधित साहित्य को व्यवस्थित रूप से संकलित करने के लिए निम्नलिखित चरण अपनाए गए—

1. शोध विषय से संबंधित प्रमुख कीवर्ड निर्धारित किए गए।
2. प्रासंगिक अकादमिक डेटाबेस में साहित्य खोजा गया।
3. केवल विश्वसनीय एवं सहकर्मी-समीक्षित अध्ययनों का चयन किया गया।
4. चयनित अध्ययनों की गुणवत्ता, प्रासंगिकता एवं विश्वसनीयता का मूल्यांकन किया गया।
5. समान विषयों को वर्गीकृत कर उनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

इस प्रक्रिया से यह सुनिश्चित किया गया कि अध्ययन अद्यतन, प्रामाणिक तथा वैज्ञानिक साक्ष्यों पर आधारित रहे।

डेटा विश्लेषण की विधि

संकलित साहित्य का विश्लेषण **विषयगत विश्लेषण** एवं **तुलनात्मक विश्लेषण** के माध्यम से किया गया। विश्लेषण के दौरान निम्न प्रमुख विषयों पर विशेष ध्यान दिया गया—

- संयुक्त एवं एकल परिवार की अवधारणा
- परिवार संरचना में परिवर्तन के सामाजिक कारण
- नगरीकरण एवं औद्योगीकरण का प्रभाव
- महिलाओं की शिक्षा एवं आर्थिक भागीदारी
- रोजगार एवं प्रवास की भूमिका
- वृद्धजनों की देखभाल
- बच्चों का समाजीकरण
- सामाजिक मूल्यों एवं पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन
- डिजिटल संचार एवं विस्तारित परिवार की नई अवधारणा

इन सभी विषयों के आधार पर विभिन्न अध्ययनों के निष्कर्षों का तुलनात्मक परीक्षण किया गया तथा समान एवं भिन्न प्रवृत्तियों की पहचान की गई।

चित्र 3: संयुक्त बनाम एकल परिवार

अध्ययन की नवीनता

© 2026. This article is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

Vol. 14, Issue 07, July: 2026
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

प्रस्तुत अध्ययन की प्रमुख विशेषता यह है कि यह संयुक्त एवं एकल परिवारों की तुलना केवल सह-निवास के आधार पर नहीं करता, बल्कि परिवार को एक **गतिशील सामाजिक नेटवर्क** के रूप में देखता है। अध्ययन में आर्थिक सहयोग, भावनात्मक समर्थन, डिजिटल संपर्क, पीढ़ीगत संबंध, महिलाओं की बदलती भूमिका तथा वृद्धजनों की सामाजिक सुरक्षा जैसे समकालीन आयामों को एकीकृत रूप में विश्लेषित किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन पारिवारिक परिवर्तन को बहुआयामी सामाजिक संक्रमण की प्रक्रिया के रूप में समझने का प्रयास करता है।

अध्ययन की सीमाएँ

यह अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों एवं प्रकाशित साहित्य पर आधारित है। अतः इसके निष्कर्ष उपलब्ध स्रोतों की गुणवत्ता एवं दायरे पर निर्भर हैं। विभिन्न राज्यों, जातीय समूहों तथा सांस्कृतिक समुदायों के बीच पारिवारिक संरचना में पाए जाने वाले क्षेत्रीय अंतर इस अध्ययन में विस्तृत रूप से सम्मिलित नहीं किए जा सके हैं। इसी प्रकार व्यक्तिगत अनुभवों एवं व्यवहारगत परिवर्तनों का प्रत्यक्ष सर्वेक्षण इस शोध का भाग नहीं है।

नैतिक पक्ष

अध्ययन में किसी भी प्रकार के प्राथमिक डेटा, मानव प्रतिभागियों अथवा व्यक्तिगत जानकारी का उपयोग नहीं किया गया है। सभी तथ्य एवं निष्कर्ष केवल प्रकाशित एवं सार्वजनिक रूप से उपलब्ध अकादमिक स्रोतों पर आधारित हैं। प्रयुक्त साहित्य को उचित संदर्भों सहित उद्धृत किया गया है तथा अनुसंधान नैतिकता, बौद्धिक संपदा अधिकार एवं शैक्षणिक ईमानदारी के सिद्धांतों का पूर्णतः पालन किया गया है।

परिणाम एवं चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय समाज में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ती प्रवृत्ति से संबंधित उपलब्ध अकादमिक साहित्य, सरकारी रिपोर्टों तथा जनसांख्यिकीय अध्ययनों का विश्लेषण किया गया। समीक्षा से स्पष्ट हुआ कि भारतीय परिवार व्यवस्था पूर्णतः समाप्त नहीं हो रही है, बल्कि बदलती सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप अपने स्वरूप, कार्यों तथा संबंधों का पुनर्गठन कर रही है। अध्ययन से प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं।

परिवार संरचना में परिवर्तन

साहित्य के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि संयुक्त परिवारों की तुलना में एकल परिवारों की संख्या विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में निरंतर बढ़ रही है। इसका प्रमुख कारण रोजगार के अवसरों हेतु प्रवास, नगरीकरण, सीमित आवास, उच्च जीवन-यापन लागत तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती आवश्यकता है। दूसरी ओर, ग्रामीण क्षेत्रों में संयुक्त परिवार अभी भी अपेक्षाकृत अधिक प्रचलित हैं, यद्यपि वहाँ भी धीरे-धीरे संरचनात्मक परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं।

तालिका 1. परिवार संरचना में परिवर्तन के प्रमुख कारण

क्रम	प्रमुख कारक	परिवार पर प्रभाव
1	नगरीकरण	छोटे परिवारों की संख्या में वृद्धि
2	रोजगार हेतु प्रवास	संयुक्त परिवारों का भौगोलिक विभाजन
3	उच्च शिक्षा	व्यक्तिगत निर्णय क्षमता एवं स्वायत्तता में वृद्धि
4	महिलाओं का रोजगार	पारंपरिक भूमिकाओं में परिवर्तन
5	सीमित आवास	एकल परिवार को बढ़ावा
6	वैश्वीकरण एवं आधुनिक जीवनशैली	व्यक्तिगत जीवन शैली को प्राथमिकता

सामाजिक संरचना पर प्रभाव

समीक्षा से यह स्पष्ट हुआ कि परिवार के स्वरूप में परिवर्तन का प्रभाव सामाजिक संबंधों पर भी पड़ा है। संयुक्त परिवारों में सामूहिक उत्तरदायित्व, साझा संसाधन एवं पारस्परिक सहयोग अधिक पाया जाता है, जबकि एकल परिवारों में निर्णय लेने की स्वतंत्रता एवं निजी जीवन की गोपनीयता अधिक होती है। इसके साथ ही पारिवारिक सहयोग की प्रकृति प्रत्यक्ष सह-निवास से हटकर आर्थिक, डिजिटल एवं भावनात्मक संपर्क पर अधिक आधारित होती जा रही है।

तालिका 2. संयुक्त एवं एकल परिवारों की तुलनात्मक विशेषताएँ

आयाम	संयुक्त परिवार	एकल परिवार
निर्णय प्रक्रिया	सामूहिक	दंपति/व्यक्तिगत
आर्थिक व्यवस्था	साझा आय एवं व्यय	स्वतंत्र आय एवं व्यय
वृद्ध देखभाल	परिवार आधारित	सीमित या बाहरी सहायता पर निर्भर
बच्चों का समाजीकरण	बहु-पीढ़ीय वातावरण	माता-पिता केंद्रित
व्यक्तिगत स्वतंत्रता	अपेक्षाकृत कम	अपेक्षाकृत अधिक
भावनात्मक सहयोग	विस्तारित परिवार से	सीमित सदस्यों तक

4.3 महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि महिलाओं की शिक्षा एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता ने पारिवारिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किया है। रोजगार, उच्च शिक्षा तथा आर्थिक योगदान ने महिलाओं की निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में भागीदारी बढ़ाई है। एकल परिवारों में महिलाओं को पारिवारिक निर्णयों में अपेक्षाकृत अधिक स्वायत्तता प्राप्त होती है, जबकि संयुक्त परिवारों में सहयोग एवं जिम्मेदारियों का वितरण अधिक व्यापक

© 2026. This article is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

Vol. 14, Issue 07, July: 2026
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

होता है। इसलिए पारिवारिक संरचना की सफलता केवल उसके आकार पर नहीं, बल्कि पारिवारिक संबंधों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

4.4 वृद्धजनों एवं बच्चों पर प्रभाव

साहित्य समीक्षा से ज्ञात हुआ कि संयुक्त परिवार वृद्धजनों को सामाजिक सुरक्षा, भावनात्मक सहयोग एवं दैनिक देखभाल उपलब्ध कराने में अपेक्षाकृत अधिक सक्षम होते हैं। इसके विपरीत, एकल परिवारों में प्रवास एवं रोजगार के कारण वृद्धजन कभी-कभी अकेलेपन एवं सीमित पारिवारिक सहयोग का अनुभव कर सकते हैं।

बच्चों के संदर्भ में संयुक्त परिवारों में बहु-पीढ़ीय समाजीकरण, सांस्कृतिक मूल्यों का हस्तांतरण एवं पारिवारिक अनुभवों का लाभ मिलता है, जबकि एकल परिवारों में माता-पिता बच्चों की शिक्षा एवं व्यक्तिगत विकास पर अपेक्षाकृत अधिक प्रत्यक्ष ध्यान दे पाते हैं।

तालिका 3. विभिन्न आयु समूहों पर पारिवारिक परिवर्तन का प्रभाव

समूह	प्रमुख सकारात्मक प्रभाव	प्रमुख चुनौतियाँ
बच्चे	व्यक्तिगत देखभाल, आधुनिक शिक्षा	सीमित सामाजिक संपर्क
महिलाएँ	निर्णय क्षमता एवं आर्थिक स्वतंत्रता	कार्य-जीवन संतुलन
वृद्धजन	संयुक्त परिवार में सामाजिक सुरक्षा	एकल परिवार में अकेलेपन की संभावना
युवा	रोजगार एवं गतिशीलता	पारिवारिक दूरी

4.5 भारतीय परिवार का उभरता स्वरूप

इस अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि भारतीय परिवार व्यवस्था पूर्णतः संयुक्त से एकल परिवार में परिवर्तित नहीं हो रही है, बल्कि **संशोधित विस्तारित परिवार** के रूप में विकसित हो रही है। अनेक परिवार भौगोलिक रूप से अलग रहने के बावजूद नियमित आर्थिक सहायता, डिजिटल संचार, पारिवारिक समारोहों एवं संकट के समय सहयोग के माध्यम से परस्पर जुड़े रहते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिक भारतीय परिवार में संयुक्तता का स्वरूप बदल रहा है, समाप्त नहीं हो रहा।

तालिका 4. अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

उद्देश्य	प्रमुख निष्कर्ष
परिवार संरचना में परिवर्तन का अध्ययन	संयुक्त परिवारों की तुलना में एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही है
परिवर्तन के कारणों की पहचान	नगरीकरण, शिक्षा, रोजगार एवं प्रवास प्रमुख कारण हैं
सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण	पारिवारिक भूमिकाओं एवं संबंधों का पुनर्गठन हुआ है
महिलाओं की भूमिका	निर्णय क्षमता एवं आर्थिक भागीदारी में वृद्धि
वृद्धजनों एवं बच्चों पर प्रभाव	देखभाल के स्वरूप में परिवर्तन एवं नई चुनौतियाँ
भारतीय परिवार का भविष्य	पारंपरिक एवं आधुनिक मूल्यों का मिश्रित पारिवारिक मॉडल उभर रहा है

समग्र चर्चा

साहित्य से प्राप्त निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि भारतीय समाज में परिवार संस्था समाप्त होने के बजाय नई सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को पुनर्गठित कर रही है। संयुक्त और एकल परिवारों को परस्पर विरोधी व्यवस्थाओं के रूप में देखने के बजाय उन्हें भारतीय सामाजिक परिवर्तन की निरंतर प्रक्रिया के दो परस्पर जुड़े रूपों के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है। आधुनिक परिस्थितियों में परिवार की प्रभावशीलता उसके आकार से अधिक उसके भीतर विद्यमान सहयोग, विश्वास, भावनात्मक जुड़ाव, लैंगिक समानता तथा पीढ़ियों के बीच पारस्परिक उत्तरदायित्व पर निर्भर करती है।

निष्कर्ष

भारतीय समाज में परिवार सदैव सामाजिक संगठन, सांस्कृतिक निरंतरता तथा मानवीय संबंधों की सबसे महत्वपूर्ण संस्था रहा है। प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ती प्रवृत्ति केवल पारिवारिक संरचना में परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज में हो रहे व्यापक सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों का प्रतिबिंब है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, वैश्वीकरण, उच्च शिक्षा का विस्तार, महिलाओं की बढ़ती आर्थिक भागीदारी, रोजगार-आधारित प्रवास तथा बदलती जीवनशैली ने पारिवारिक संबंधों एवं भूमिकाओं को नए स्वरूप प्रदान किए हैं। परिणामस्वरूप पारंपरिक संयुक्त परिवारों की संख्या में कमी तथा एकल परिवारों की संख्या में वृद्धि दिखाई देती है, किंतु इसका अर्थ परिवार संस्था का क्षय नहीं है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि संयुक्त एवं एकल परिवार दोनों की अपनी-अपनी सामाजिक उपयोगिता, सीमाएँ तथा चुनौतियाँ हैं। संयुक्त परिवार सामाजिक सुरक्षा, भावनात्मक सहयोग, वृद्धजनों की देखभाल, बच्चों के बहु-पीढ़ीय समाजीकरण तथा सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दूसरी ओर, एकल परिवार व्यक्तिगत स्वतंत्रता, त्वरित निर्णय-निर्माण, दंपति की स्वायत्तता, महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक भागीदारी तथा आधुनिक जीवनशैली के अनुरूप लचीलापन प्रदान करते हैं। अतः किसी एक पारिवारिक संरचना को पूर्णतः श्रेष्ठ या कमतर मानना उचित नहीं होगा। परिवार की प्रभावशीलता उसके आकार की अपेक्षा सदस्यों के बीच सहयोग, विश्वास, उत्तरदायित्व तथा पारस्परिक सम्मान पर अधिक निर्भर करती है।

प्रस्तुत अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि भारतीय परिवार व्यवस्था वर्तमान समय में एक संक्रमणकालीन अवस्था से गुजर रही है।

© 2026. This article is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

Vol. 14, Issue 07, July: 2026
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

परिवार अब केवल सह-निवास पर आधारित संस्था नहीं रह गया है, बल्कि आर्थिक सहयोग, भावनात्मक संबंध, डिजिटल संचार तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों के माध्यम से विस्तारित नेटवर्क के रूप में विकसित हो रहा है। अनेक परिवार भौगोलिक रूप से अलग-अलग स्थानों पर निवास करने के बावजूद आर्थिक सहायता, नियमित संवाद, पारिवारिक निर्णयों तथा सामाजिक अवसरों के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि संयुक्त परिवार की अवधारणा आधुनिक परिस्थितियों में नए स्वरूप में पुनर्गठित हो रही है।

अध्ययन यह भी इंगित करता है कि भविष्य में परिवार संबंधी सामाजिक नीतियों को केवल पारिवारिक आकार के आधार पर नहीं, बल्कि परिवार की कार्यात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विकसित किया जाना चाहिए। वृद्धजनों की देखभाल, कार्यरत दंपतियों के लिए सहयोगी सेवाएँ, गुणवत्तापूर्ण बाल देखभाल, महिलाओं के कार्य–जीवन संतुलन, मानसिक स्वास्थ्य सहायता तथा परिवार-अनुकूल सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। साथ ही, डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग पारिवारिक संपर्क एवं पीढ़ियों के मध्य संवाद को सुदृढ़ करने के लिए भी किया जा सकता है।

शोध-अंतर की दृष्टि से यह अध्ययन परिवार को केवल संयुक्त अथवा एकल की पारंपरिक श्रेणियों में सीमित न रखकर उसे एक गतिशील सामाजिक संस्था के रूप में देखने का प्रयास करता है। अध्ययन यह स्थापित करता है कि भारतीय समाज में पारिवारिक परिवर्तन एक रैखिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं तकनीकी कारकों के पारस्परिक प्रभाव से विकसित होने वाली बहुआयामी प्रक्रिया है। यही दृष्टिकोण इस अध्ययन को पूर्ववर्ती शोधों से अलग बनाता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि भारतीय परिवार व्यवस्था परिवर्तन के दौर से अवश्य गुजर रही है, परंतु उसके मूल सामाजिक मूल्य—पारस्परिक सहयोग, उत्तरदायित्व, आत्मीयता एवं सांस्कृतिक निरंतरता—आज भी विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं। भविष्य की सामाजिक संरचना में ऐसे परिवारों की आवश्यकता होगी जो परंपरागत पारिवारिक मूल्यों और आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित कर सकें। यही संतुलित एवं समावेशी पारिवारिक मॉडल भारतीय समाज के सतत सामाजिक विकास, सामाजिक समरसता तथा मानव कल्याण के लिए अधिक उपयुक्त सिद्ध होगा।

संदर्भ

[1] S. Chakravorty, S. Goli, एवं K. S. James, "भारत में परिवार जनसांख्यिकी: उभरती प्रवृत्तियाँ एवं उनकी चुनौतियाँ," *SAGE Open*, खंड 11, अंक 2, 2021. DOI: 10.1177/21582440211008178

[2] M. Bag, "औद्योगीकरण के पश्चात् परिवार की संरचनात्मक एवं कार्यात्मक परिवर्तनशीलता: एक मानवशास्त्रीय अध्ययन," *Society and Culture Development in India*, खंड 2, अंक 1, पृ. 61–80, 2022. DOI: 10.47509/SCDI.2022.v02i01.05

[3] S. Singh एवं M. Bhandari, "भारतीय संयुक्त परिवार में पीढ़ियों के मध्य धन प्रबंधन एवं नियंत्रण," *The Sociological Review*, खंड 60, अंक 1, पृ. 46–67, 2012. DOI: 10.1111/j.1467-954X.2011.02047.x

[4] K. Allendorf, "क्या भारत में परिवार एकल स्वरूप की ओर बढ़ रहे हैं? (1992–2006 के संदर्भ में परिवार संरचना एवं युवा महिलाओं का स्वास्थ्य)," *Demography*, खंड 50, अंक 3, पृ. 853–880, 2013. DOI: 10.1007/s13524-012-0173-1

[5] K. Allendorf, "भारत में पारिवारिक संबंधों की गुणवत्ता एवं मातृ स्वास्थ्य सेवाओं के उपयोग का अध्ययन," *Studies in Family Planning*, खंड 41, अंक 4, पृ. 263–276, 2010. DOI: 10.1111/j.1728-4465.2010.00252.x

[6] P. Dhillon, L. Ladusingh, एवं G. Agrawal, "भारत में वृद्धजनों की पारिवारिक संरचना में परिवर्तन: एक विघटनात्मक विश्लेषण," *Quality in Ageing and Older Adults*, खंड 17, अंक 2, पृ. 83–96, 2016. DOI: 10.1108/QAOA-10-2014-0024

[7] P. Dommaraju, "भारत में एकल-व्यक्ति परिवारों की प्रवृत्ति," *Demographic Research*, खंड 32, लेख संख्या 45, पृ. 1239–1266, 2015. DOI: 10.4054/DemRes.2015.32.45

[8] N. Purkayastha, P. Dhillon, B. Ali, एवं J. Hazarika, "भारत में एकल-व्यक्ति एवं केवल दंपति वाले परिवारों की बदलती प्रवृत्तियाँ," *Journal of Population Ageing*, खंड 17, पृ. 51–69, 2024. DOI: 10.1007/s12062-022-09401-6

[9] R. K. Chadda एवं K. S. Deb, "भारतीय परिवार व्यवस्था, सामूहिकतावादी समाज एवं मनोचिकित्सा," *Indian Journal of Psychiatry*, खंड 55, अनुपूरक 2, पृ. S299–S309, 2013. DOI: 10.4103/0019-5545.105555

© 2026. This article is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).